MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Issue-18, Vol-03, April to June 2017

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

www.vidyawarta.com

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

27) नंदूरबार जिल्हयातील प्रमुख पिकांचा भौगोलिक अभ्यास
श्री. राजेंद्र के. पवार, शिंदखेडा, जि. धुळे || 118

28) किल्लेदर्शन—सिध्दगड
डॉ. श्री. निळकंठ रामचंद्र व्यापारी, मुरबाड, जि. ठाणे || 120

29) म.गांधी प्रणित ग्रामस्वराज्य व सामाजिक सुधारणा—एक दृष्टीकोण
डॉ. राजेश्री एन. कडू , सावरगांव, ता.नरखेड, जि.नागपूर || 122

30) माहितीशास्त्र आणि माहितीप्रधान समाज:एक अवलोकन
प्रा. डॉ. रश्मी शामसुंदर बकाणे, गोकुंदा ता.किनवट || 127

31) महात्मा ज्योतीराव फुले यांचा सामाजिक दृष्टीकोन
सचिन गुंडीराम डेंगळे, नांदेड. || 130

32) दूरदर्शनाचा कुमारावस्थेतील विद्यार्थ्यांच्या मानसिक आरोग्यावर होणाऱ्या परिणामांचा अभ्यास
डॉ. शेख एस. जे., चोपडा, जि. जळगांव || 132

33) उ०प्र० में आर्थिक सुधार पूर्वकाल तथा सुधार उपरान्त काल में रोजगार की वृद्धि दर का अध्ययन
डॉ. अवंतिका, मेरठ || 135

34) आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नारी
प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव , सोनपेठ, जि.परभणी || 140

35) दलित उत्पीडित, शोषित नारी दर्द का दस्तावेज:द्रोणाचार्य एक नहीं
श्रीमंडळे वैशाली शिवाजीराव, उदगीर जि.लातूर || 142

36) किराना घराने की महिला गायक हीराबाई बड़ोदेकर एवं प्रभा अत्रे जी का.....
चन्द्रलता, दिल्ली || 145

37) अंग्रेजी अखबारों में स्त्री छवि का चित्रण: एक अध्ययन
नेहा गोस्वामी दिल्ली || 147

38) सीहोर एवं रायसेन जिले में सहकारी कृषि साख के बढ़ते कदम जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक एवं जिला .....
श्रीमती ड़ॉ प्रगति जैन. बुढ़ार, जिला—शहडोल (म.प्र.) || 152

39) देश में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों पर पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा
श्रीमती ड़ॉ स्मृति जैन, गाडरवाड़ा, जिला—नरसिंहपुर (म.प्र.) || 158

Late Ramesh Warpudkar ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (Arts) College, Sonpeth, Dist Parbhani

34

आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नारी

(विशेष संदर्भ-चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य)

प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्षा
के.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ, जि.परभणी

****

महिलाओं की शिक्षा का दिनोंदिन बढ़ता ग्राफ, साइंस और टेक्नोलॉजी में बढ़ती पकड ओर समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं का काबीज होना, वही असल तस्वीर हे आज की इस `आधी दुनिया` की भारत में महिलाओं की मोजूदा तस्वीर तेयार केरने के लिए न सिर्फ सरकार की ओर से प्रयास किए गए हे, बाल्कि स्वंय महिलाओं ने आगे बढ़कर हर क्षेत्र में अपनी पकड मजबूत करते हुए खुद को एक नई पहचान दी हे. नारी शक्ति का सघन पुंज हे, वह अनोखी शक्ति जिस रूप में जहां-जहां प्रकट होती है वह उसी रूप में परिलिक्षित होती है | जब नारी अपने केंन्द में खडी होकर हुंकार भरती है तो वह दुर्गा एवं काली की मूरत बन जाती हे | उस समय उसके दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास के सामने कोई नही रूक सकता | नारी सृष्टि की कमनीय, अनुपम सुंदर कृति हे | संवेदना उसकी सर्वोत्कृष्ट विशेषता है |जब नारी अपनी सुकोमल संवेदनाओं के संग विहार करती है तो सृष्टि में एक नई आभा, एक दिव्य प्रकाश बिखर जाता है | सृष्टि के विकासक्रम में उसका अनोखा योगदान हे | उसे सौंदर्य ममता, वात्सल्य भावना, संवेदना, करूणा, क्षमा, त्याग एवं समर्पण की सजीव प्रतिमूर्ति माना जाता है | नारी के इन्ही देवी गुणों की वजह से वेदकाल से लेकर आधुनिक काल तक उसका महम्व अक्षुण्ण रहा है | मेधा छन्न मध्यकाळ एवं आधुनिक उपभोक्तावादी समाज भी अपनी लाख कोशीशों के बावजूद उसके वजूद को समाप्त नहीं कर सके |

आधुनिक शिक्षा के प्रचार - प्रसार के फलस्वरूप इस काल में नारी के व्यक्तित्व का यथेष्ट विकास हु आ है | इस शिक्षा से उसे नई दृष्टि मिली है | उसका विवेक जागृत हुआ है | अपनी स्थित का ज्ञान हुआ और उसका मन प्राचीन स्थिती के बंधन से मुक्त होकर अपने विकास के सपने देखने लगा हे, आधुनिक नारी परंपरागत वर्जनाओं से मुक्ति पाने का हर संभव प्रयास कर रही हे और पूर्णत्व की खोज में प्रयत्नशील है | वह अपने व्यक्तित्व के प्रति भी सजग है | शिक्षीत नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग है | वह राजनीति, विज्ञान, इतिहास कला सभी क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहति है | संसार की हर गतिविधि से वह परिचित हो जाना चाहती है | क्योंकी वह भी सृष्टी का एक महत्वपूर्ण अंग हे |

हर युग में नारी की प्रतिभा विद्वता व विशिष्टता से व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक तथा विश्व तक उपकृत होते रहे है | उत्थान एवं नवनिर्माण नवसृजन में नारी का योगदान भूलाया नही जा सकता ``वैदिक काल नारी के युग का स्वर्णकाल माना गया उन दिनों नारी को आदर्श सरस्वती में धन का लक्ष्मी में पराक्रम का दूर्गा में सौंदर्य रति में, पवित्रता का गंगा में, सृष्टि की संचालिका शक्ति प्रकृति का भी नारी रूप में चित्रण किया गया है |`` ``सन १९४७ में महिलाओं का शैक्षिक स्तर केवल ८ प्रतिशत था जो सन २००१ में ही बढ़कर ५४ प्रतिशत हो गया था, इसी तरह सन् १९६१ से १९७१ में महिलाओं का जीवन दर ४०.६ था सन् २००१ आते आते यह दर ६४.९ तक पहुंच गया | साथही महिलाबों की समाज में दिन - ब -दिन बढ़ी भागीदारी को एक नजर भी लेते हे सन् १९५२ में भारतीय संसंद में ४ प्रतिशत महिलाएं होती थी. सन् २००९ में हुए प्रन्द्रहवें लोकसभा चुनाव में ५९ महिलाए चुनकर संसंद भवन में पहूँची, जो की स्वतंत्रता हासिल करने के बाद का सुबसे बड़ा आकड़ा हे एक और खास बात यह कि, इनमें से २३ महिलांए ४० साल से कम उम्र की है और इनमें से ज्यादातर पोस्ट ग्रेजुएट है |``

आईसी आईसी आई बॅक की प्रबंध निर्देशक सीईओ चंदा कोचर जब किसी कार्यक्रम में अधिकारियों से भरे सदन को संबोधित करती हे या पाँच बार बॉक्सिंग में विश्व चेंपियन रह चुकी एस.सी.मेरीकॉम पती ओर दो जुड़वा बच्चे के साथ ऑलंपिक का कास्य पदक दिखलाती हे ४६ वर्षीय प्रेमलता अग्रवाल ऐवरेस्ट फतह कर उम्मीद के पंखों पर सवार नजर आती हे आखों को यकीन दिलाना पड़ता है कि सीकर की फ्लाइट लेफ्टिनंट स्नेहा शेखावत ही है जिसने ६२ वे गणतंत्र दिवस की परेड में वासुयेना दस्ते का नेतृत्व कर इतिहास रचा ओर केप्टन उर्मिला यादव एअर इंडिया के विमान का अगला पहिया गिर जाने पर भी उसे सकुशल जमीन पर उतारकर ५२ यात्रियों की जान बचाने में कामयाब रही ताजातरीन संदर्भ प्रेमा जयकुमार पेरूमल (ऑटो ड्राइवर की बेटी) आखील भारतीय सी.ए.परीक्षा में टॉप करती हे तो कहना पड़ता हे, ये है युवातियों की असली रोल मॉडल आज नारी की शिक्षा यहाँ तक ही सिमित नहीं हे डॉ.शशिप्रभा शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है - ``शिक्षित होने के कारण उनकी अपनी व्यक्तिगत मांगे है वह अपने व्यक्तित्व को पति के व्यक्तित्व के साथ विलीन नहीं कर सकती. यह विलीन करना उसकी प्रकृति के अनुकूल नहीं हे | वह अपने व्यक्तित्व को अलग से रखना चाहती हैं |``

साहसी नारी के रूप में किरण बेदी का नाम केवल हिन्दुस्तान में ही नही अपितु पुरी दुनिया इस नाम से चिरपरिचित है | कैदियों को

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

सुधारने का चट्टानी इरादा व्यवस्था से टकराने का माद्दा और भ्रष्टाचार मुक्त भारत का स्वप्न ये तीन घटक लेकर जो तस्वीर बनती है वह 'किरण बेदी' की है तभी तो वे `आई डेयर` समाज को देती है | भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष में ३२२ दिन बिताती है सवासो करोड़ के लोकतंत्र भारत पर सोलह साल शासन कर जाती है 'इन्दिरा गांधी` `अमेरिका की ६४% महिला ईंजिनिअर्स में से २४% भारतीय हैं |` अब बात मलाला युसुफजई की जिसे स्वात घाटी में स्त्री शिक्षा का प्रसार करने पर गोली मारी गई इलाज (इंग्लड में) करवा रही मलाला आज भी तालिबानियों की बंदूको से बेखबर स्त्री शिक्षा के लिए किसी भी तरह की कुर्बानी देने को तैयार है उम्र १५ साल और होसला पहाड़ो वाला. नोबल पुरस्कार के लिए नामित तो होना ही था. आज आधुनिक परिवेश में पुरूषों के कधों से कंधा लगाकर महिलाएँ अर्थाजन कर ही हैं इसके लिए वह सरकारी, अर्धसरकारी एवं नीजी कंपनियों में नोकरी कर रही है | इस सिलसिले में सुमन कृष्णकांत ने लिखा है - उदयपुर के सेवानिवृत्त शिक्षक श्यामसुंदर मानते है कि, ``पत्नी का नौकरी करना उनके जीवन के लिए बहुत लाभप्रद रहा|`` मध्यवर्गीय आर्थिक प्रताड़नाओं से विवश महिलांओ की नौकरी के अनेक दूरगामी परिणाम भी सम्मुख है | महिलाओं की नौकरी से जहाँ घर का स्तर उपर उठना है, वहीं भावनात्मक वातारवण अव्यवस्थित होने लगता हे | बच्चों की उपेक्षा पति-पत्नि के मध्य आनंदविहिन स्थितियाँ जैसे `ताशमहल` की शोभना का रक्ताल्पता से पीड़ित बेटा दो हफ्तों से टाइफाइड बुखार सें पिड़ीत है डाक्टरी राय के अनुसार नर्सिग होम में अविलम्ब भर्ती करना आवश्यक हे, लेकिन ऑफिस की ``एज्युकेशन वीमेन्स इक्वालिटी`` की कार्यशाला की जिम्मेदारी के कारण बच्चू को दवा देकर छोड़कर जाना मजबूरी हैं |`` कामकाजी नारी के अंतर्गत दुसरों के घरों में चौका-बर्तन या अन्य छोटो काम कर अपना ओर अपने परिवार का गुजारा करनेाली नारियों का समावेश होता हे. सुबह से जीवन की भागदौड़ शुरू होती हे | चित्रा मुद्गल की कहानी `सुख` की फुली कामकाजी नारी हे | वह उपने जीवन की व्यस्तता को व्यक्त करती है - ``हमारी ऐसी किस्मत कहाँ दीदी | .... बासन भाँडे निपटाते वैसे ही देर हो जाती है | फिर टाईम -बेटाईम नींद आती हैं ?`` `ट्रेन छूटने तक` इस कहानी की नायिका शुभा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर है |घर की जिम्मेदारी पूर्ण रूप से शुभा पर है नोकरी का जुमा उसके कंधो पर से शायद कभी नही हट सकेगा | पापा के मृत्यु के बाद घर का खर्चा पूरा करने के लिए पैंकिग डिपार्टमेंट में सर्विस करनी पड़ी थी | सुबह की निकली शुभा शाम को घर लोटती | ऐसे ही शाम को जब वह घर वापस लौटी तो माँ को रोता हुआ पाया की भाई सुरेश ने एक बच्चे की माँ, एक तलाकशुदा गोवानी लड़की से शादी कर ली ओर हमेशा के लिए घर छोड़कर चला गया था | शुभा कहती ``इससे क्या फर्क पड़ता है |`` माँ के आसु उसे ओर भी तोखा कर गये थे `पिछले नो महिने से वह सर्विस करता था उसने कभी एक भी पैसा घर खर्च के लिए तुम्हे दिया था ?` इस कहानी में शुभा की माँ कभी नहीं चाहती की शुभा को शादी हो जाए |घर का सारा खर्च शुभा को करना पड़ता है |`

चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित -सुख कहानी में सुमंगला आत्मनिर्भर है | घर के खासे निकट जादवपूर विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान की प्रवक्ता है, चित्रा मुद्गल द्वार लिखित बहुत सी नायिकाएँ आत्मनिर्भर होकर जीवन जीने का प्रयास कर रही है | अर्थ की असिलित सत्ता मनुष्य की जीवन शैली, रहन-सहन, आजीविका निर्वाह, आवाज, स्वास्थ आचार, व्यवहार, आदि विविध पक्षों को निर्धारित करती है | समाज की आर्थिक भूमिका जब मानवीयता की पराकाष्ठा तक पहुँचती तब `भूख` जैसी कथाओं का सृजन होता है चित्रा मुद्गल का अनुभव भी यही है कि `भुख` उनके लेखकिय जीवन में रोमांचक अनुभव बन कर आई |``

आज नाही चाहती है भला बनना, नेक होना ठिक है, मगर स्वंय को कमजोर बनाना उचिन नहीं. नारी स्वयं डॉमिनेट होना चाहती है | यह एक मनोवैज्ञानिक सच है लेकिन यह भी सच है कि, जहाँ उसकी अपनी रजामंदी शामिल हो प्रेम से डॉमिनेट होना उसे अच्छा लग सकता है गुस्से या हिटलरशाही से नहीं | आज गाँवो और कस्बो में ऐसी तमाम महिलांए हैं जो उच्च पदों पर आसीन हैं बिड़ला इंस्टीट्युट ऑफ साइंस (पिलानी) ने इन छोटे कस्बे की महिलांओं पर एक सर्वे किया और पाया कि वहाँ की ९० महिलांए शैक्षणिक संस्थान या किसी सरकारी कार्यालय में ऊँचे ओहदे पर कार्य कर रही हैं. सर्वे से प्राप्त निष्कर्षो का व्यापक विश्लेषण करने पर यह बात भी सामने आई कि ये सभी ९० कामकाजी महिलांए खुद को कही ज्यादा आत्मनिर्भर मानती है. इनका यह भी मानना है कि घर हो या बाहर ये हर तरह के निर्णय लेन में सक्षम हैं. यकीनन आज समाज को परिपाटी पर महिला को तस्वीर अबला नारी की न होकर एक सक्षम स्वतंत्र परिपक्व और सकारात्मक सोंच रखने वाली सशक्त नारी को है.

संदर्भ :-

१) दे. भास्कर-दि. १९ नवम्बर २०११
२) लो. समाचार- `सखी`-२९ जनवरी २०१० पृ. १२-१३
३) साठोत्तर हिन्दी उपन्यास में नारी-डॉ.नीलम मैगजीन गर्ग -पृ .९२
४) लो. समाचार - `सखी` -८ मार्च २०१३ पृ.९
५) विद्रोही स्त्री-जर्मन ग्रीयर-पृ.१३८
६) आदि-अनादि-(ताशमहल)- चित्रा मुद्गल-पृ.११९
७) जिनावर-चित्रा मुद्गल पृ.४७
८) आदि-अनादि-ट्रेन छुटने तक-चित्रा मुद्गल

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani